ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 13 अंकः 152 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका जनवरी 2021

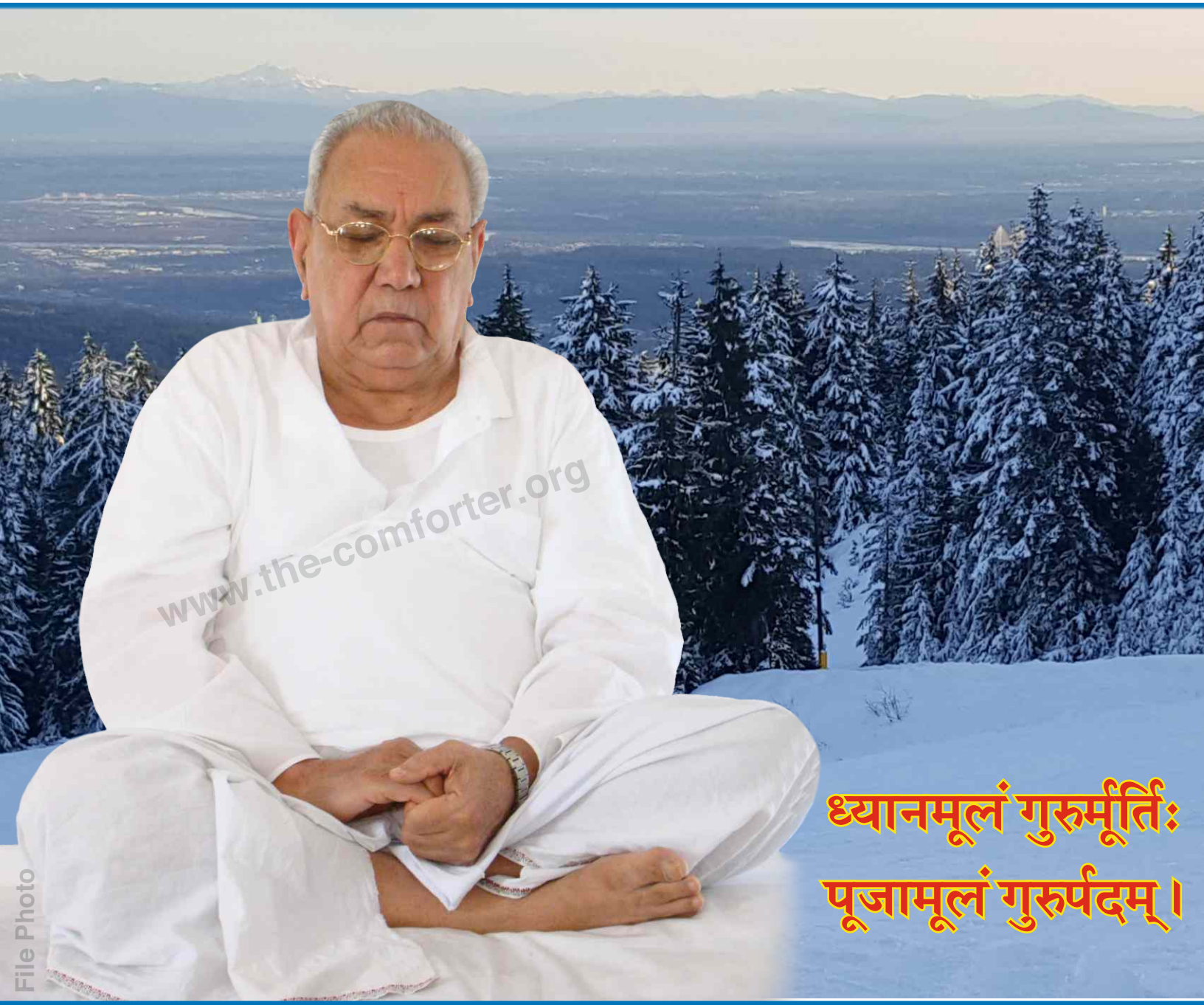

File Photo

ध्यानमूलं गुरुर्मूर्तिः
पूजामूलं गुरुर्पदम्।

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

भारत का स्वर्ण युग

'' अब इस देश का, इस धर्म का, इस संस्कृति का उत्थान शुरू हो गया है। हमारे पतन के काल को ऋषि-मुनि भी नहीं रोक सके, क्योंकि कालचक्र अबाध गति से चलता आया है। अब इस दर्शन का उत्थान चक्र शुरू हो गया है। संसार की कोई शक्ति इसके उत्थान को नहीं रोक सकती, किसी में वो सामर्थ्य नहीं है। श्री अरविंद के अनुसार- इसे रोकने की कल्पना करना ही पागलपन है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 152 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका जनवरी 2021

अनुक्रम

सम्पादकीय: 'सिद्धयोग- एक सरल साधना' 4
समर्पण 5
भारत के पुनर्जन्म में आध्यात्मिक शक्ति का महत्त्व 6-8
एकाग्रता: सफलता की कुंजी 9
कहानी- परम शिष्य का भ्रम 10-12
साधना विषयक बातें 13-15
मानस की नीरवता 16-18
सिद्ध-योगियों की महिमा 19-21
रूपान्तरण (Transformation) 22-24
आध्यात्मिक सत्संग ? 25-29
Distributing the Eternal Bliss.....30-32
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....33-34
मैं मुक्त कर दूंगा 35
भारत देश की उन्नति में आध्यात्मिक चेतना की सुदृढ़ता 36
योग के आधार 37
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 38
ध्यान की विधि 39

❖
संस्थापक एवं संरक्षक:
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖
सम्पादक:
रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

सिद्धयोग- एक सरल साधना

नूतन वर्ष 2021 की आप सभी पाठक वृन्द को हार्दिक शुभ कामनाएँ।

सन् 2020 को कोई भूल नहीं सकता। हम तो क्या आगे आने वाली कई पीढियाँ याद रखेंगी कि 2020 में समय थम सा गया, दुनिया रूक सी गई जैसे किसी परमसत्ता के आदेश का पालन कर रही हो-

कोई शहर से अपने गांव नहीं जा सका, कोई दूसरे जिले में अटक गया, कोई दूसरे राज्य में व कोई दूसरे देश में।

कुछ समय के लिए जिन्दगी की भाग-दौड़ थम सी गई। जो जहाँ था, वो वहीं रह गया। विकास के सारे मनसूबे रद्दी की टोकरी में और बस एक ही बात सबके मन में थी कि कैसे भी करके जीवन बच जाए। सब भगवान् को याद करने में लग गए। पूरी दुनिया वर्ष 2020 में, अधर में लटक गई। यह प्रकृति का बहुत बड़ा संदेश था। ये तो ट्रेलर है, अभी युग परिवर्तन की वेला में बहुत बड़े बड़े परिवर्तन होने हैं। ऐसी परिस्थिति में मानव अपने आप को कैसे बचा पाएगा ?

ऐसी विकट परिस्थिति में मानव तभी अपने आप को संभाल पाता है जब उसके पास आध्यात्मिक शक्ति हो, जिसके सहारे वह हर विपदा का सामना पूर्ण साहस के साथ करने में सफल हो जाता है। भारतीय योग दर्शन हमें उस आध्यात्मिक शक्ति को जाग्रत करना सिखाता है। मनुष्य को अपने भीतर आत्म परिपूर्णता के लिए योग के पथ पर आरूढ़ होना चाहिए।

युग परिवर्तन के संधिकाल में मनुष्य को बहुत सी विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। योगारूढ़ साधक इन विकट परिस्थितियों में भी मानसिक संतुलन बनाए रखकर, शक्ति के मार्ग दर्शन में चलकर विजयी होता है। इसलिए मनुष्य मात्र को सिद्धयोग पद्धति को अंगीकार कर अपनी आंतरिक चेतना को जगाना चाहिए।

सद्गुरुदेव सियाग के ही शब्दों में -''प्राचीन काल की आराधनाओं में भोग है तो मोक्ष नहीं, और मोक्ष है तो भोग नहीं। एक को त्यागना पड़ता था। लेकिन इस आराधना में भोग और मोक्ष, दोनों साथ-साथ चलते हैं। ये गीता वाला निष्काम कर्मयोग है।''सद्गुरुदेव द्वारा बताई गई सिद्धयोग की यह साधना बहुत ही सरल है। इस साधना में साधक को कुछ भी त्यागने की आवश्यकता नहीं है। साधक बड़े ही सहज भाव से, केवल मानसिक मंत्र जाप और ध्यान से, अपने दैनिक जीवन के कार्यों को करते हुए, आध्यात्मिकता के परम शिखर तक पहुँच सकता है।

यह आध्यात्मिक शक्ति उसे निर्भीक, निर्द्वंद बनाकर एक ऐसा तेज प्रदान करती है जिससे वह किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपना मनोबल बनाए रखते हुए, अन्तर्मन में शांत और स्थिर रहता है। आइए ! हम सब गुरुदेव सियाग सिद्धयोग को जन-जन तक पहुँचाए।

◆◆◆◆

www.the-comforter.org

समर्पण

व्यक्तिगत 'अहं' चेतना की सुदृढ़ दीवार है जिसमें हम स्वयं को बन्द कर लेते हैं। हम प्रत्येक वस्तु का नाता अपने से जोड़ लेते हैं। सोचते हैं, मैंने यह किया, मैंने वह किया, मैंने क्या नहीं किया ? इस क्षुद्र 'मैं' से छुटकारा पाओ, अपने अन्दर घुसी हुई इस पैशाचिकता को मार डालो।

''मैं नहीं, तू ही है'' – यही कहो, यही अनुभव करो, उसके अनुसार ही जीयो। जब तक हम 'अहं' निर्मित इस संकुचित दुनिया का परित्याग नहीं कर देते, तब तक हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

शक्ति के पूज्य वे मौन पुरुष हैं, जो केवल जीवित रहते हैं और स्नेह करते हैं तथा चुपचाप अपने व्यक्तित्व को कर्म क्षेत्र से हटा लेते हैं। वे कभी 'मैं' और 'मेरा' की रट नहीं लगाते। वे केवल निमित्त बनने में ही स्वयं को कृतार्थ मानते हैं। ऐसे मनुष्यों में से ही ईसा और बुद्ध प्रकट होते हैं। वे मानव रूप में पूँजीभूत आदर्श मात्र होते हैं, उसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

परमात्मा ने स्वयं को सर्वोत्तम ढंग से छिपा रखा है, अतः उसका कार्य ही सर्वश्रेष्ठ है। इसी प्रकार जो अपने को सर्वोत्तम ढंग से पीछे रख सकता है, वही सबसे अच्छा और अधिक कार्य कर सकता है। अपने आप पर विजय पा लो तो समस्त विश्व तुम्हारा हो जाएगा।

संदर्भ–स्वामी विवेकानंद 'सिंहनाद' पुस्तक से

भारत के पुनर्जन्म में आध्यात्मिक शक्ति का महत्त्व

''जितनी गहराई से हम देखेंगे, उतने ही हम इस बात के कायल होंगे कि एक ही चीज है जिसकी कमी है, और भारत के लिए सबसे पहले जिसे प्राप्त करने का प्रयास करना नितांत आवश्यक है, वह है शक्ति- शारीरिक शक्ति, मानसिक शक्ति, नैतिक शक्ति, पर सबसे ऊपर आध्यात्मिक शक्ति, जो कि अन्य सभी का एक ही अनंत और शाश्वत स्रोत है। यदि हमारे पास यह शक्ति है तो बाकी सब कुछ सरलता से स्वाभाविक रूप से हमारे पास आ जायेगा।''

पुरातन माता, भारत वास्तव में पुनर्जन्म लेने का प्रयास कर रही है, असह्य वेदना और आँखों में आँसू लिये हुए प्रयास कर रही है, पर उसका प्रयास सफल नहीं हो पा रहा। उसे कठिनाई किस बात की है, इतनी विशाल होते हुए वह उतनी सशक्त भी होगी ही? अवश्य ही कोई भारी दोष होगा, हम में कुछ महत्त्वपूर्ण कमी है, ऐसा भी नहीं कि उस स्थल पर अपनी उंगली रखना कठिन हो। ''हमारे पास बाकी सारी चीजें हैं, बस शक्ति-शून्य हैं, ऊर्जा का अभाव है।''

हमने शक्ति को त्याग दिया और इसीलिए हम शक्ति द्वारा त्याग दिये गये। हमारी माता हमारे अंत:करणों में, हमारे मस्तिष्कों में, हमारी भुजाओं में नहीं है।

पुनर्जन्म लेने की अभिलाषा हम में प्रचुर परिमाण में विद्यमान है, इसमें कोई कमी नहीं है। कितने- कितने प्रयास किये गये, धर्म के, समाज के और राजनीति के क्षेत्र में कितने आंदोलनों को प्रारंभ किया गया ! पर सबको एक ही नियति ने आ घेरा या घेरने की तैयारी कर रही है। एक क्षण के लिए वे उभरते हैं, तब आवेग ढीला पड़ जाता है, आग बुझ जाती है, और यदि वे टिके रह जाते हैं तो बस रीते घोंघों जैसे, उन आकृतियों जैसे, जिनमें से ब्रह्म तिरोहित हो चुका है। अथवा जिनमें उसे तमस और निष्क्रियता ने दबा रखा है। हमारे प्रारंभ सशक्त होते हैं पर न तो उनकी परिणति होती है और न वे प्रतिफलित होते हैं।

अब हम एक अन्य दिशा में पहल करने जा रहे हैं। हमने एक महान औद्योगिक आंदोलन प्रारंभ किया है, जो एक दरिद्र भूमि को धनवान बनाकर उसे नवजीवन प्रदान करेगा। अनुभव से कुछ न सीखकर हम यह नहीं समझ रहे हैं कि इस आंदोलन की भी वही गति होनी है जो और सभी की हुई, ''जब तक कि हम उस एक महत्त्वपूर्ण वस्तु को पाने का प्रयास नहीं करते, जब तक हम शक्ति प्राप्त नहीं कर लेते।''

क्या वह ज्ञान है जिसका अभाव है? हम भारतीय ऐसे देश

www.the-comforter.org

में जन्मे और पालित-पोषित हुए हैं, जहाँ मानवजाति के प्रारंभ से ही ज्ञान का भंडार भरता और उत्तरोत्तर संचित होता रहा है, हमारे भीतर अनेक सहस्र वर्षों की परंपरागत निधि उपलब्ध है। पर वह एक जड़ ज्ञान है, एक बोझ जिसके तले हम दबे जा रहे हैं, एक विष जो हमें खाये जा रहा है, बजाय इसके कि एक लाठी की भांति वह हमारे पैरों को सहारा देता और हमारे हाथों में एक अस्त्र का काम देता, जैसा कि होना चाहिए था। सभी महान वस्तुओं का स्वभाव ही यही है, कि जब उनका उपयोग नहीं किया जाता अथवा गलत उपयोग किया जाता है तो वे धारण करनेवाले पर ही उलट पड़ती हैं और उसे नष्ट कर देती हैं।

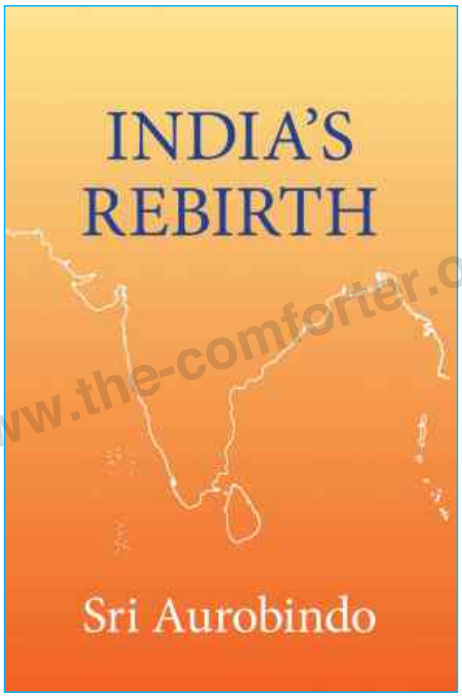

www.the-comforter.org

क्या प्रेम, उत्साह, भक्ति का अभाव है? ये सब तो भारतीय स्वभाव में ही अंतर्निहित हैं, किंतु शक्ति के न होने से हम ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते. हम निर्देश नहीं कर सकते, हम उसे सुरक्षित तक नहीं रख सकते। 'भक्ति', ऊपर उठनेवाली ''लौ'' है, 'शक्ति' ईंधन है। यदि ईंधन की कमी है तो आग कितनी देर ठहर सकेगी?

जितनी गहराई से हम देखेंगे, उतने ही हम इस बात से कायल होंगे कि एक ही चीज है जिसकी कमी है, और सबसे पहले जिसे प्राप्त करने का प्रयास करना नितांत आवश्यक है, वह है शक्ति- शारीरिक शक्ति, मानसिक शक्ति, नैतिक शक्ति, पर सबसे ऊपर आध्यात्मिक शक्ति, जो कि अन्य सभी का एक ही अनंत और शाश्वत स्रोत है। यदि हमारे पास शक्ति है तो बाकी सब कुछ सरलता से स्वाभाविक रूप से हमारे पास आ जायेगा। शक्ति के अभाव में हमारी स्थिति स्वप्न देखनेवाले व्यक्तियों जैसी है, जिनके हाथ होते हुए भी वे न पकड़ सकते हैं, न वार कर सकते हैं, जिनके पैर तो है, पर वे भाग नहीं सकते।

यदि भारत को अपना अस्तित्व बनाये रखना है तो उसे फिर से युवा बनना होगा। ऊर्जा के धाराप्रवाह तरंगायित स्रोत उसमें उड़ेलने होंगे। उसकी आत्मा को फिर से वैसी ही बनना होगा जैसी वह पुरातन काल में थी, लहरों जैसी, विशाल, शक्ति शाली, इच्छानुसार शांत अथवा विक्षुब्ध, कर्म अथवा बल का एक महासागर।

हममें से बहुत-से, जिन्हें निष्क्रियता के अंधकारमय भारी राक्षस तमस् ने पूरी तरह दबोच रखा है, आजकल यह कहने लगे हैं कि यह असंभव है, कि भारत क्षीण, रक्तहीन और प्राणहीन हो चुका है, इतना कमजोर कि फिर कभी उबर नहीं सकता, कि हमारी जाति की नियति अब मिट जाना है। ऐसा कहना मूर्खतापूर्ण और काहिलियत है। किसी भी

व्यक्ति को अथवा राष्ट्र को, यदि वह स्वयं नहीं चाहता तो कमजोर होना जरूरी नहीं, और न किसी व्यक्ति अथवा राष्ट्र को, यदि वह जान बूझकर मिटना नहीं चाहता तो, नष्ट होना आवश्यक है। - क्योंकि राष्ट्र है क्या ? हमारी मातृभूमि क्या है ? वह एक भूमि का टुकड़ा ही तो नहीं है, न वाणी का एक अलंकार है और न मस्तिष्क की कल्पना की एक उड़ान मात्र है।

वह एक महान शक्ति है, जिसका निर्माण उन करोड़ों एककों की शक्तियों को मिलाकर हुआ है, जो राष्ट्र का निर्माण करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे सारे करोड़ों देवताओं की शक्ति को एकत्र कर एक बलराशि संचित की गई और उसे परस्पर जोड़ कर एकता स्थापित की गई जिसमें से भवानी महिष-मर्दिनी प्रकट हुई। वह शक्ति जिसे हम भारत, भवानी, भारती कहकर पुकारते हैं, तीस करोड़ लोगों की शक्तियों की जीती-जागती एकता है, पर वह निष्क्रिय है, तमस् के इंद्रजाल में बंदी होकर, अपने पुत्रों की आत्मासक्त क्रियाहीनता और अज्ञानता के वशीभूत होकर।

हमें शक्ति का सृजन वहाँ करना है, जहाँ वह पहले नहीं थी; हमें अपने स्वभावों को बदलना है, और नये हृदयों के साथ नये मानव बनना है, फिर से जन्म लेना है। हमें बीजरूप में ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जिनमें शक्ति का अधिकतम सीमा तक विकास किया जा सके, जिनके व्यक्तित्व के कोने-कोने में उसे भरा जा सके और जो छलक कर भूमि को उर्वर बनाये।

भवानी की ज्वाला को अपने अंत:करणों और मस्तिष्कों में धारण कर ये लोग जब निकल पड़ेंगे तो अपनी भूमि के हर कोने और कंदरा में वे उस ज्योति को ले जायेंगे।

(उस पत्र से उद्धृत जो श्री अरविंद ने बंगाली में अपनी पत्नी मृणालिनी देवी को लिखा था, जिसमें उन्होंने उन्हें अपने देश की स्वतंत्रता के लिए काम करने का आह्वान समझाने का प्रयास किया था, जिसे वे महसूस कर रहे थे; कुछ वर्षों बाद पुलिस ने यह पत्र जब्त कर लिया था और अलीपुर बम के मामले में सबूत के रूप में पेश किया था।)

अगस्त 30, 1905- जबकि और लोग अपने देश को एक जड़ पदार्थ का टुकड़ा समझते हैं - थोड़े से चरागाह और खेत, वन और पहाड़ियाँ और नदियाँ-मैं अपने देश को अपनी माता मानता हूँ।

मैं उसकी आराधना करता हूँ, माता के रूप में उसकी पूजा करता हूँ। यदि एक राक्षस, एक पुत्र की माता की छाती पर चढ़कर उसका खून चूसने लगे तो वह क्या करेगा ? मैं यह जानता हूँ कि मुझमें इस गिरी हुई कौम को उबारने की ताकत है। शारीरिक शक्ति की बात नहीं-मैं कोई तलवार या बंदूक उठाकर लड़ने नहीं जा रहा - पर ज्ञान की शक्ति से, आध्यात्मिक शक्ति से....।

-महर्षि श्री अरविन्द
'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक से

www.the-comforter.org

एकाग्रता: सफलता की कुंजी

www.the-comforter.org

जीवन में बहुत सी असफलताओं का मूल कारण 'एकाग्रता' की कमी होती है। एकाग्रता एक खोजबत्ती की तरह है, जब इसका प्रकाश-पुँज विशाल क्षेत्र में फैलाया जाता है तो इसकी किसी विशिष्ट लक्ष्य पर एकाग्र होने की शक्ति कमजोर पड़ जाती हैं, परन्तु एक समय में एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित करने से यह शक्तिशाली हो जाती है। महान् व्यक्ति एकाग्रता सम्पन्न व्यक्ति होते हैं। वे अपने सम्पूर्ण मन को एक समय में, एक ही लक्ष्य पर रखते हैं।

व्यक्ति को एकाग्रता की वैज्ञानिक विधि का ज्ञान होना चाहिए, जिसे वह अपने ध्यान को बाधाओं की वस्तुओं से मुक्त करके, उसे एक समय में एक ही वस्तु पर केन्द्रित कर सके। एकाग्रता की शक्ति द्वारा मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मन की अपार शक्ति का उपयोग कर सकता है और जिन द्वारों से असफलता के प्रवेश की सम्भावना है, उनकी रक्षा कर सकता है।

-स्वामी विवेकानन्द

कहानी

परम शिष्य का भ्रम

समृद्ध और खुशहाल विजयनगर साम्राज्य में, नगर के शोर से दूर एक संत रहते थे। उन्होंने घोर तपस्या करके ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया था। उनके साथ उनके दो शिष्य रहते थे जिनका नाम उपेन्द्र और श्रीधर था। दोनों ही पूरी निष्ठा से आश्रम और अपने गुरु की सेवा करते थे। दोनों ब्रह्ममुहुर्त में उठकर अपने गुरु द्वारा बताए अनुसार आश्रम के कार्यों में लग जाते थे। वह संत दोनों शिष्यों की समय-समय पर भूरि-भूरि प्रसंशा कर देते थे। धीरे-धीरे दोनों को अपने मन में यह गुमान होने लगा कि वो ही गुरु का परम शिष्य है। दोनों ही मन ही मन अपने को श्रेष्ठ समझने लगे। संत अपने शिष्यों के मन की बात को जान चुके थे, पर उन्होंने उनसे कुछ नहीं कहा।

इसके अलावा आश्रम में मनोहर नाम का एक और शिष्य था जो कि संत के साथ हर समय रहता था। संत के साथ रहने के कारण उसे उनकी हर छोटी बड़ी जरूरतों की जानकारी थी जिसे वह बड़ी बखूबी निभाता था। स्वभाव से वह शांत था। मनोहर उनके साथ यात्रा भी करता था। सभी भक्तगण इस बात से भली भाँति परिचित थे कि मनोहर संत के बहुत करीब है इसलिए वह संत के साथ-साथ उसकी भी अच्छी आवभगत करते थे।

एक दिन संत ने उन तीनों को अपने पास बुलाया। उपेन्द्र और श्रीधर भागे-भागे अपने गुरु के पास आए और प्रणाम करके बैठ गए। मनोहर भी वहीं बैठा था। संत ने उनकी आँखों में देखा और फिर धीरे से अपने मन की बात कह दी। वो कहने लगे कि अब उनके इस ज्ञान को आगे जन मानस तक पहुँचाने का समय आ गया है। यह सोच कर उन्होंने यह निर्णय लिया है कि उपेन्द्र

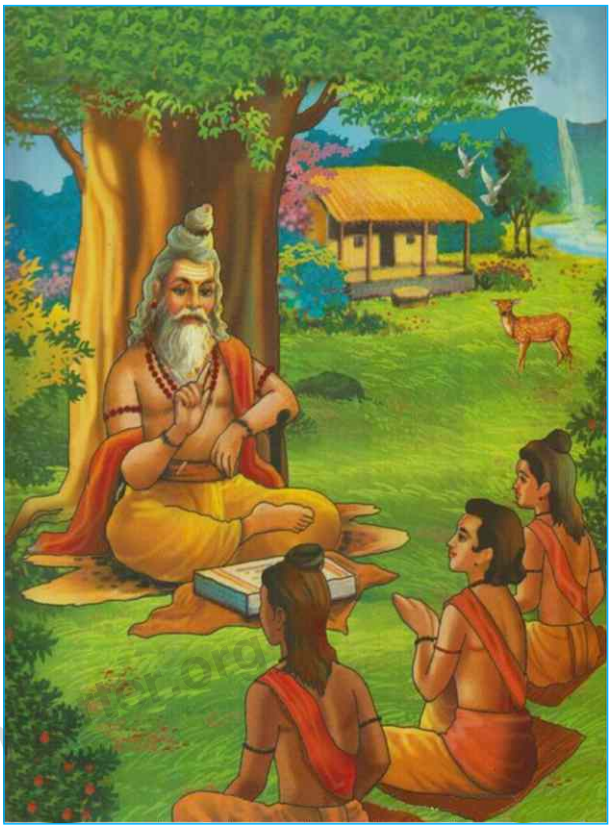

नगर में जाए और वहाँ जाकर मंत्रियों, सेठों, व्यापारियों एवं सामान्य जन में उनका प्रचार कार्य संभाले। इसके साथ गुरु ने आदेश दिया कि वो अगली सुबह ही इस कार्य के लिए नगर की ओर प्रस्थान करे और ठीक एक महीने बाद आकर उनसे मिले।

इसके बाद उन्होंने श्रीधर की ओर देखते हुए कहा कि अब से आश्रम के सभी कार्यों की जिम्मेदारी उसकी है। अब उन्होंने मनोहर की ओर देखा और बड़े ही रुष्ट भाव से कहा कि अब से वो गाय-भैंसों के तबेले में रहेगा और एक महीना तक दिन-रात उसकी साफ-सफाई का कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि किसी भी गाय या भैंस के मल या मूत्र त्यागने पर तत्काल ही उस जगह की सफाई करनी होगी। वहाँ एक भी मक्खी नहीं दिखनी चाहिए। फिर वह संत बोले कि अब सबसे वह एक महीने के बाद ही वार्तालाप करेंगे क्योंकि एक महीने के लिए वो मौन धारण कर रहे हैं।

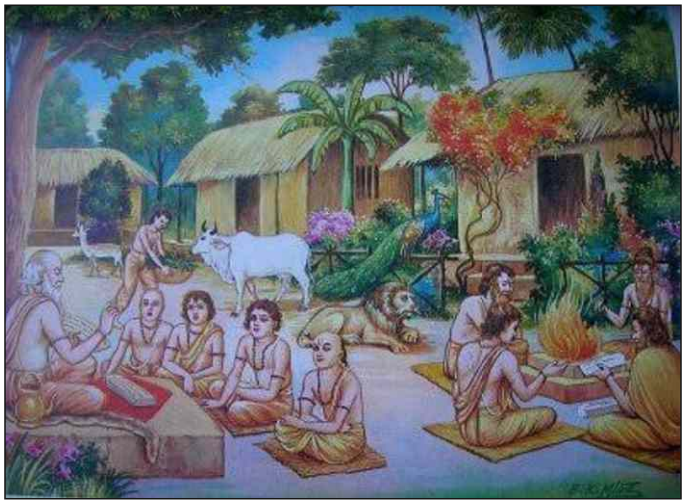

तीनों ने गुरु को प्रणाम किया और उनके कक्ष से बाहर आ गए। अगली सुबह उपेन्द्र गुरु के चरण स्पर्श करके नगर की ओर निकल पड़ा। रास्ते भर वो यही सोचता रहा कि गुरु जी मुझसे इतना प्यार नहीं करते जितना वो श्रीधर को करते हैं। मुझे तो उन्होंने अपने से दूर कर दिया और श्रीधर को अपने पास रखते हुए आश्रम की सारी जिम्मेदारी उसे सौंप दी है। लगता है गुरुदेव को उस पर मुझसे ज्यादा विश्वास है।

इसी उधेड़बुन में कब नगर आ गया उसे पता ही नहीं चला। वहाँ पहुँचकर उसने अपने रहने और खाने आदि की व्यवस्था की पर उसका मन बिलकुल उचाट था। रह-रह कर वह यही सोच रहा था कि श्रीधर को अपने पास रखकर गुरुदेव ने यही बताया है कि श्रीधर ज्यादा भरोसे के लायक है। पर मन ही मन वह इस बात से खुश था कि गुरुदेव ने मनोहर को अपने से दूर कर, गायों के तबेले की देखभाल का कार्य सौंप दिया।

उधर अगली सुबह आश्रम में श्रीधर उठा और उसे याद हो आया कि आज से उसको उपेन्द्र के भी सभी कार्य करने हैं। अब आश्रम की साफ-सफाई, गायों को दुहना, चारा देना, गुरुजी के लिए रसोई में भोजन पकाना, कपड़े धोना, कुँए से पानी निकालना आदि सभी कार्यों की जिम्मेदारी उसके ऊपर आ गई है। यह सब सोचकर उसका मन खिन्न हो गया। वह सोचने लगा कि मैंने कितनी लगन से गुरुजी की सेवा की, पर फिर भी गुरुदेव को उपेन्द्र ही ज्यादा प्रिय है तभी तो नगर में बड़े-बड़े मंत्रियों, सेठों और व्यापारियों आदि के बीच प्रचार कार्य का काम गुरुदेव ने उसको सौंपा है।

कितना ही अच्छा होता अगर ये कार्य मुझे देते

www.the-comforter.org

तो मुझे भी बड़े-बड़े लोगों से मिलने का मौका मिलता और उन्हें भी पता चलता कि मैं गुरुदेव का कितना पहुँचा हुआ शिष्य हूँ, पर गुरुदेव ने उपेन्द्र को इस कार्य के लिए चुना है, इसका मतलब उन्हें उपेन्द्र पर मुझसे ज्यादा भरोसा है। मनोहर पर तो श्रीधर को तरस ही आ रहा था।

इन्हीं विचारों के साथ उपेन्द्र और श्रीधर ने अनमने ढंग से एक महीना निकाल दिया। असल में स्वभाव से उपेन्द्र को आश्रम में एकांत में रहकर साधना करने और गुरु के समीप रहने की चाहत थी। जबकि श्रीधर को लोगों के बीच गुरु का प्रचार कार्य करने की चाहत थी पर चाहत तो दोनों में ही थी।

ठीक एक महीने बाद एकादशी के दिन, उपेन्द्र, श्रीधर और मनोहर निश्चित समय पर संत के पास पहुँचे और उन्हें प्रणाम किया। संत ने उनसे कुशलता पूछने के बाद, उन तीनों से बारी-बारी पिछले एक महीने में उनके मन में आए तीव्र विचारों एवं भावों को बताने के लिए कहा। उपेन्द्र और श्रीधर ने अपने-अपने मन की बात गुरु के सामने रख दी।

अब संत ने मनोहर की ओर देखा और उसके शांत मुख को देखकर कहा कि वो भी अपने मन में आए विचारों एवं भावों को व्यक्त करे। यह सुनकर मनोहर बोला- क्षमा करें गुरुदेव ! मेरे पास आपको बताने के लिए कुछ विशेष नहीं है। आपकी आज्ञा का सही ढंग से पालन कर पाऊँ- इसके अलावा मेरे मन में कोई अन्य विचार नहीं आया। गायों के बीच उनकी सेवा करने में मुझे वैसा ही आनन्द आया जैसा आपके निकट रहने पर आता था।

संत ने उनकी बातें सुनने के बाद उन्हीं से पूछा कि बताओ तुम में से कौन है मेरा परम शिष्य, कौन है मेरा समर्पित शिष्य? उपेन्द्र और श्रीधर की आँखें शर्म से झुक गईं। दोनों ने एक साथ गुरु के चरणों में क्षमा याचना की। तब वो संत बोले, ''वत्स ! तुम्हारे अन्दर की इस कमी को उजागर करने के लिए ही मैंने यह योजना बनाई थी। मैंने जानबूझ कर तुम दोनों की चाहतों के विपरीत कार्य दिया था। एक समर्पित शिष्य के मन में अपने लिए कोई चाह नहीं रह जाती। गुरु आज्ञा ही उसकी चाह बन जाती है। एक समर्पित शिष्य सभी कार्यों को समान दृष्टि से देखते हुए, उन्हें पूरी निष्ठा और उत्साह के साथ करता है क्योंकि सभी कार्यों में उसे गुरु कृपा ही नजर आती है। मनोहर ने यह साबित करके दिखा दिया है।

अपने गुरु से यह सुनने के बाद उपेन्द्र और श्रीधर को अपनी गलतियों का अहसास हो गया था। उनका यह भ्रम कि वे गुरु के परम शिष्य हैं, टूट चुका था। आज उन्हें एहसास हुआ कि खुद को खो कर ही गुरु कृपा को पाया जा सकता है।

जो भी कार्य सद्गुरु ने अपने को सौंपा है, उसको बखूबी निभाना ही परम शिष्य का कर्तव्य है।

◆◆◆

गतांक से आगे...

साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करे। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

मस्तक के ऊपर एक कमल है, वह है ऊर्ध्व चेतना का केंद्र, हो सकता है कि वह कमल खिलना चाहता है।

मस्तक के ऊपर है ऊर्ध्व चेतना का स्थान, ठीक मस्तक के ऊपर से वह शुरू होता है एवं और भी ऊपर अनंत तक जाता है। वहाँ जो विशाल शांति और नीरवता हैं उन्हीं का Pressure (दबाव) तुम अनुभव कर रही हो। वह शांति और चेतना समस्त आधार में उतरना चाह रही है।

जब चेतना विशाल और विश्वमय हो जाती है और अखिल विश्व में शक्ति ही दिखायी देती है तब अहं और नहीं रह जाता, रह जाती है सिर्फ शक्ति की गोद में तुम्हारी वास्तविक सत्ता, शक्ति की संतान और शक्ति का अंश।

क्यों दुःख पा रही हो? शक्ति पर निर्भर रह, समता बनाये रखने से दुःख पाने का कोई कारण नहीं। मनुष्यों से सुख, शांति और आनंद पाने की आशा व्यर्थ है।

तुम्हीं मेरी बात समझ नहीं सकीं। मैंने यह नहीं कहा था कि तुम्हें बीमारी नहीं है, मैंने यह कहा था कि यह बीमारी Nervous (स्नायुजात) है। एक तरह की बदहजमी है जिसे डॉक्टर नाम देते हैं Nervous Dyspepsia (स्नायुजात अजीर्ण) जो Sensation (भाव) तुम अनुभव कर रही हो, गले और छाती में खाना उठकर अटकना इत्यादि, वे सब उसी रोग के लक्षण हैं, Nervous Sensation (स्नायुजात अनुभव)।

इस रोग से मुक्ति बहुत-कुछ मन पर निर्भर करती है। मन यदि रोग के suggestion (सुझाव) के अनुसार खाता-पीता है तो रोग बहुत दिन तक बना रहता है, मन यदि उन सब सुझावों को नकार देता है तो रोग से छुटकारा आसान हो जाता है, विशेषकर जब श्रीमां की शक्ति भी हो। मैंने यही कहा था कि उल्टी-उल्टी के भाव को accept न करो (प्रश्रय न

www.the-comforter.org

दो), शक्ति (गुरु) को पुकारो। बीमारी चली जायेगी।

मैंने बार-बार एक बात तुम्हें लिखी है, उसे भूल क्यों जाती हो ?शांति और दृढ़ता के साथ, शक्ति पर पूरी तरह निर्भर रह पथ पर आगे बढ़ना होगा। अधैर्य और चंचलता को प्रश्रय नहीं देना, समय लगने या बाधा आने पर भी विचलित, अधीर या उद्विग्न न हो, चलना होगा। अधीर होने, अस्थिर और उद्विग्न होने से बाधा बढ़ जाती है, और भी देर लगती है। यह बात सदा याद रखकर साधना करो।

बिलकुल निराहार रहना ठीक नहीं-उससे कमजोरी बढ़ जाती है, कमजोरी बढ़ने से बीमारी लंबी हो जाती है। निदान है दूध तो पीना ही चाहिये, संभव हो तो पेट को थोड़े-थोड़े खाने का भी अभ्यास करना चाहिये। श्रीमां कह रही हैं पीला केला खाना भी अच्छा है। - इस रोग में यकृत की गड़बड़ें हो सकती हैं। खाते ही जरा देर में जी का मिचलाना है Nervous Dyspepsia (स्नायुजात अजीर्णता) का लक्षण।

दोनों तरह से करना अच्छा है। यदि केवल दूर रहकर साधना करना संभव होता तो वही सर्वश्रेष्ठ होता, किंतु ऐसा हमेशा होता नहीं। असली बात तो यह है कि चैत्य में अपनी दृढ़ अवस्थिति कर या निरापद दुर्ग बना साधना करनी होती है-अर्थात् स्थिर-धीर भाव से शक्ति पर निर्भर करना, अधीर न हो प्रसन्न चित्त से चलना।

तुम जो कह रही हो वह ठीक है-बड़ी बाधाओं की अपेक्षा ये छोटी-छोटी असंपूर्णताएँ इत्यादि ही हैं, इस समय असली अंतराय। लेकिन इन्हें धीरे-धीरे बाहर निकालना होता है, असंपूर्णता को पूर्णता में बदलना होता है, आनन-फानन में सब कुछ नहीं हो जाता। अतएव उन्हें देखकर दुःखी या अधीर नहीं होते, शक्ति ही धीरे-धीरे वह काम कर देगी।

जैसे इस साधना में चंचलता दूर करनी होती है उसी तरह दुःख को भी स्थान नहीं देना चाहिये। शक्ति (गुरु) पर भरोसा रखकर स्थिर चित्त और शांत प्रसन्न मन से आगे बढ़ना होता है। जब शक्ति पर भरोसा हो तब दुःख की गुंजायश ही कहाँ? शक्ति दूर नहीं हैं, हमेशा पास ही हैं यह एहसास और विश्वास हमेशा बना रहना चाहिये।

उससे घबराओ नहीं। हर समय प्रयास करके याद रखना आसान नहीं-जब शक्ति की उपस्थिति से सारा आधार भर उठेगा तब उसका स्मरण स्वतः बना रहेगा, भूलने का कोई कारण नहीं रहेगा।

जो अनुभव कर रही हो वह ठीक ही है-यही है

www.the-comforter.org

मनुष्य की बाधा, दुःख और अवनति का कारण। मनुष्य स्वयं ही है अपने अशुभ का निर्माता, प्रश्रयदाता और उससे चिपटा रहता है।

यदि गंभीर हृदय (चैत्य) का पथ अनुसरण करो, शक्ति की गोद में शिशु की नाई रहो तो ये सब कामावेग इत्यादि धावा बोलने पर भी कुछ नहीं कर सकेंगे और अंततः तो घुस भी नहीं सकेंगे।

यदि शक्ति के प्रति शुद्ध प्रेम और भक्ति हो, उन पर भरोसा हो तो उन्हें पाया जा सकता है। ये न हों तो कठिन प्रयास द्वारा भी उन्हें नहीं पाया जा सकता।

यह सब हैं बाह्य प्रकृति जो अंदर घुसने के लिये साधक के चारों ओर मंडराती रहती हैं। अपने तन, मन, प्राण यदि इस बाह्य प्रकृति के कवल से कवलित रहें तो निस्संदेह इस तरह का पर्दा रह सकता है लेकिन यदि शक्ति पर भरोसा हो, उनसे युक्त हो जायें तो उनकी शक्ति वह पर्दाफाश कर देगी और तन, मन, प्राण और चेतना को अपने यंत्र के रूप में परिणत कर देगी।

शरीर में शक्ति को पुकार कर इन सब व्यथा और बीमारियों को दूर भगाना होगा।

Yes, this is the true psychic attitude- (हां, यही सच्चा चैत्य मनोभाव है।) जो यह मनोभाव हमेशा, हर घटना में बनाये रख सकता है, वह सीधे गंतव्य पर पहुँच जाता है।

मनुष्य का मन ही है अविश्वासी कल्पना, गलत धारणा और अश्रद्धा से भरा, अज्ञानमय और दुःख से संकुल। अज्ञान ही है अश्रद्धा का कारण, दुःख का मूल। मनुष्य की बुद्धि है अज्ञान का यंत्र, वह प्रायः ही गलत चिंतन और गलत धारणाएँ बनाती है पर सोचती है मैं ही ठीक हूँ।

उसके चिंतन में गलती है कि नहीं और गलती कहाँ है यह देखने और विचारने का धैर्य उसमें नहीं। यहाँ तक कि भूल दिखाने से अहंकार को चोट लगती है, क्रोध या दुःख होता है, स्वीकार करना नहीं चाहती। लेकिन दूसरों के दोषों और गलतियों को दिखा सकने से, उसे खूब तृप्ति मिलती है। दूसरों की निंदा सुन तत्काल उसे सच मान बैठती है, वह कितनी सच है या झूठ इस पर विचार भी नहीं करती।

इस तरह के मन में श्रद्धा और विश्वास आसानी से नहीं जमते। इसीलिये लोगों की चर्चा सुनते नहीं, सुननी भी पड़े तो उससे अपने को प्रभावित नहीं करते। असली चीज है अपने अंतरस्थ चैत्य पुरुष को जगाना।

उसी में से सत्य बुद्धि धीरे-धीरे मन में पनपती है। सत्य भाव और भावना हृदय में आती हैं, सत्य प्रेरणा प्राण में उठती है। चैत्य के प्रकाश में मनुष्य सब चीजों, घटनाओं और जगत् को नयी दृष्टि से देखता है, मन की अज्ञानमयी गलत दृष्टि, गलत विचार, अविश्वास और अश्रद्धा और नहीं आते।

किसी ने 'न' के साथ दुर्व्यवहार किया।

इस समय प्रायः ही साधकों का अहंकार उठकर साधना में घोर अवरोध पैदा कर रहा है, बहुतों से अनुचित व्यवहार करा रहा है। तुम स्वयं अचल हो अंतरस्थ रहो, उसे जगह न दो।

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

मानस की नीरवता

अतः हम एक नए देश की खोज में हैं, परन्तु यह बता देना ठीक होगा कि उस देश जिसे हम छोड़ रहे हैं और उसके जिसका अभी आविर्भाव नहीं हुआ, इन दोनों चेतना की अपूर्व यात्रा के बीच एक काफी कष्टकर निर्जन भूमि है। यह एक परीक्षा-काल है जो हमारे संकल्प की दृढ़ता के अनुसार कम या अधिक लंबा होता है।

प्रारंभ में, पूर्ण नीरवता न भी हो, तो भी जब मानसिक शान्ति अंशतः स्थापित हो गई और अभीप्सा या हमारी आवश्यकता प्रबल हो उठी, सतत् और विदारक बन गई मानो भीतर एक गड्ढा सतत लिये चल रहे हों, तब पहली अजीब चीज देखने में आती है जिसका हमारी शेष योगसाधना पर असीम प्रभाव पड़ेगा। सिर के चारों ओर, विशेष रूप से गर्दन में, साधक एक विलक्षण दबाव सा महसूस करता है जो मिथ्या सिरदर्द की तरह लग सकता है। धीरे-धीरे यह दबाव एक अधिक रूप धारण करता है और साधक सचमुच का एक प्रवाह अनुभव करता है। जो नीचे उतर रहा है - एक शक्ति धारा, जो अप्रिय विद्युत धारा की तरह नहीं, बल्कि अधिकतर एक तरल राशि सम होती है। तब मालूम पड़ता है कि उस 'दबाव अथवा आरंभ के मिथ्या सिरदर्द का एकमात्र कारण इस पराशक्ति के अवरोहण में हमारी रुकावट है और हमें करना उतना ही है कि उसका मार्ग बंद न करें' (अर्थात प्रवाह को सिर के अन्दर न रोके) बल्कि उसे अपनी सत्ता के सारे स्तरों पर, ऊपर से नीचे तक उतरने दें। आरंभ में यह बहाव काफी रुक-रुक कर चलता है और अनियमित होता है और जब वह धीमा हो जाये, तब उसके साथ पुनः संपर्क जोड़ने के लिए सचेत रूप से थोड़ी कोशिश करनी पड़ती है। फिर यह प्रवाह अविराम, स्वाभाविक, स्वतःप्रवृत्त हो जाता है और एक नूतन शक्ति का अतिसुखद बोध होता है मानो हमारे फेफड़ों की क्रिया से अधिक विपुल कोई दूसरा श्वासोच्छ्वास हमें सब ओर से घेरे हुए है, शराबोर कर रहा है, हमारा सब भार हर रहा है और साथ ही साथ हमें सुदृढ़ता से पूर्ण कर रहा है। शरीर पर उसका प्रभाव बहुत हद तक

www.the-comforter.org

ठीक उससे मिलता-जुलता है जैसा खुली हवा में चलने पर लगता है। वास्तव में, मनुष्य को सचमुच उसके प्रभाव का भान ही नहीं होता (क्योंकि वह बहुत ही धीमे से, थोड़ा-थोड़ा करके, अपना स्थान बनाता है) जब तक किसी कारणवश, ध्यानभंग, भूल, मर्यादा उल्लंघन द्वारा उस प्रवाह से अलग न हो जाये। उस दशा में सहसा मनुष्य अपने आप को रिक्त, संकुचित पाता है मानो अकस्मात् ऑक्सीजन कम पड़ गई हो और शरीर के मुरझा जाने की अत्यंत अप्रिय अनुभूति होती है। मनुष्य रह जाता है एक बासी सेब की तरह जिसमें से सूर्य की किरणें और रस, दोनों ही निकाल लिये गये हों। और साधक हैरान होता है कि सचमुच पहले इसके बिना वह कैसे रह पाता था। हमारी शक्तियों का यह प्रथम रूपांतर है। नीचे और चारों ओर जागतिक प्राण के सामान्य स्रोत में से जीवन शक्ति खींचने के बजाय, हम ऊपर से शक्ति लेते हैं। यह शक्ति बहुत अधिक स्पष्ट, अविरत और विषमता रहित है, और खास तौर से ताजी है। दैनिक जीवन में, अपने काम के, हजार धन्धों के बीच, यह शक्ति प्रवाह आरंभ में काफी मन्द होता है, पर एक क्षण के लिए रुक कर एकाग्रचित्त होते ही, उसका जोर से अवरोहण होता है। सब निश्चल हो जाता है। मनुष्य की दशा एक पूर्ण घट की तरह हो जाती है। प्रवाह अगर बंद हो जाती है मानो सिर से पैर तक सारी देह एक ठोस, स्फटिक के समान स्वच्छ शक्ति से भरी हो (श्री अरविन्द के शब्दों में, शान्ति का एक ठोस शीतल पिण्ड)। यदि हमारी सूक्ष्म दृष्टि खुलने लगी है तो हमें सब कुछ नीलाभ दिखता है। मनुष्य हरित नील वैदूर्य के समान लगता है - और विशाल, अतिविशाल। शान्त,

www.the-comforter.org

निस्तरंग, तिस पर वह अवर्णनीय शीतलता। सचमुच मनुष्य ने आदिस्रोत में ही डुबकी मारी है क्योंकि यह उतरती हुई शक्ति है साक्षात् भागवती शक्ति। आध्यात्मिक शक्ति शब्दमात्र नहीं है। अन्ततः उसको अनुभव करने के लिए आँखें मूंद कर बाहर से ध्यान हटाने की कोई आवश्यकता ही न रह जायेगी। चाहे मनुष्य कुछ भी कर रहा हो, खाते, पढ़ते, बातचीत करते समय, हर क्षण वह शक्ति विद्यमान रहेगी, और साधक देखेगा कि जैसे जैसे शरीर को आदत पड़ती जायेगी, वह अधिकाधिक प्रबल हो उठेगी। वास्तव में यह शक्ति का अपार पुंज है जो केवल हमारी ग्रहणशीलता अथवा योग्यता की न्यूनता द्वारा ही सीमित है।

इस अवतरणशील पराशक्ति की अनुभूति के विषय में बात करते समय पांडिचेरी के साधक उसे, 'श्री अरविन्द और श्री माताजी की शक्ति' कहा करते हैं। उनका अभिप्राय यह नहीं होता कि यह शक्ति श्री अरविन्द की और श्री माताजी की निजी मिल्कियत है। अनायास ही वे इस तथ्य को अभिव्यक्त करते हैं कि उसकी तुलना किसी भी अन्य योगपद्धति में नहीं है। श्री अरविन्द के पूर्ण योग और दूसरे योगों के बीच मुख्य अन्तर को अनुभव के आधार पर हम यहाँ स्पर्श करते हैं। यदि कोई श्री अरविन्द की योगपद्धति से पहले अन्य योग करके देखे तो वास्तव में वह एक मूलभूत व्यावहारिक अन्तर पायेगा। कुछ समय बीतने पर साधक को आरोहणशील शक्ति (जिसे भारतवर्ष में कुण्डलिनी कहते है)की अनुभूति होती है, जो काफी उग्र रूप से हमारे अन्दर मेरुदण्ड के मूल में जागती है और एक स्तर से दूसरे स्तर पर चढ़ती जाती है जब तक सिर के ऊपर न पहुँच जाये। वहाँ वह एक प्रकार के भास्वर, ज्योतिर्मय स्पन्दन में खिल उठती है जिसमें अनन्तता की अनुभूति होती है (और लय भी हो जाती है, जिसे लोग 'समाधि' कहते हैं) मानो मनुष्य सदा के लिए अन्यत्र निकल गया। सभी तापोत्पादक कहलाने योग्य योग पद्धतियों के आसन, राजयोग का ध्यान, श्वास-निग्रह या प्राणायाम इत्यादि इस पराशक्ति को जगाने का ही प्रयत्न करती हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

काश्मीर अपने नैसर्गिक सौंदर्य, हरी-भरी घाटियों, बर्फ से ढके उच्च पर्वत-शिखरों, धान के लहलहाते खेतों,बल खाते पहाड़ी रास्तों, घने जंगलों, भाँति-भाँति के फलों की बाहुल्यता, एवं पत्थरों से टकराती, शोर मचाती, निरन्तर बहती नदियों के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध तो है ही, किन्तु किसी समय यह तंत्र-साहित्य तथा आध्यात्मिक साधनाओं का भी केन्द्र रहा है। एक मान्यता के अनुसार वेदों का सम्पादन काश्मीर की सुरम्य वादियों में ही हुआ था ।आध्यात्मिक जगत् को शैव तंत्र-सिद्धान्त एवं साधना-प्रणाली काश्मीर की ही देन है। अभिनव गुप्त जैसे साधक एवं तंत्र-साहित्य के प्रकाण्ड-विद्वानों ने यहीं, इन्ही घाटियों में साहित्य रचना करते तथा साधनरत् रहते हुए संस्कृत वाग्ड़मय को समृद्ध बनाया।उनके लिखे शिव-सूत्र, प्रत्यभिज्ञाहृदयं तथा तंत्रालोक, आज भी आध्यात्मिक -जगत में पठनीय एवं आदरणीय हैं।

काल-परिवर्तन तथा युग-परिवर्तन, इस परिवर्तनशील जगत् का नियम है। मध्य एशिया की लड़ाकू जातियों की दृष्टि सदैव ही भारत पर बनी रही। परिणामतः आक्रमणों की लम्बी श्रृंखला का क्रम बना रहा।सब से आगे पंजाब तथा काश्मीर थे, जो सदैव युद्ध-क्षेत्र बने रहे। यहाँ का सामाजिक एवं आध्यात्मिक जीवन भी प्रभावित होता रहा। बहुसंख्यक वर्ग मुस्लिम धर्मावलम्बी हो गया। किन्तु फिर भी हिन्दू तथा सूफी, दोनों प्रकार के संत यहाँ होते रहे।

ईसा की चौदहवीं शताब्दी में, काश्मीर घाटी में, श्रीनगर से चार मील दूर, एक छोटे से गाँव में एक ऐसी महिला संत का प्राकट्य हुआ जो प्रभु-प्रेम में मतवाली, घाटी के जंगलों, पथरीली चट्टानों, कल-कल करते झरनों के किनारों तथा इधर-उधर छितरे पहाड़ी गाँवों में यहाँ-वहाँ डोलती फिरी। उसने हृदय की पीड़ा को अन्तर में ही दबाए रखा तथा आजीवन गुमनामी की चादर ओढ़े, प्रेम की अन्तर में धधकती अग्नि में जलते-तड़पते सुख का अनुभव करती रही। वह दिखावटी-बातूनी साधिका नहीं थी वरन् गंभीर, सच्ची विरह की मारी थी, जो

प्रेम-तत्त्व, उसकी कठिनाइयों, रहस्यों तथा रीति-नीति से पूर्णतया अवगत् थी। जिसने आन्तरिक प्रेम-कुण्ड की वेगवान-ज्वालाओं में अपना सारा जीवन, सुख-सुविधाओं एवं उमंगों को होम दिया। प्रभु-प्रेम की यही रीति है कि उसे हृदय में दबा कर जितना गुप्त रखा जाय, उसकी प्रज्वलित-अग्नि उतना ही प्रचण्ड-रूप धारण करती है। उस तपस्विनी, महायोगिनी, महाविरहणी का नाम था लल ।

लल का विरह एक ही जन्म का कमाया हुआ नहीं था, अपितु जन्मजन्मान्तर की साधना, तपस्या, वैराग्य तथा त्याग का प्रतिफल था। प्रत्येक् जन्म में उसकी प्रेम साधना आगे सरकती रही, प्रत्येक जन्म में प्रेम के धधकते ज्वालामुखी में से होकर वह निकलती रही, प्रत्येक् जन्म में उसकी विरह की पीड़ा अधिकाधिक बढ़ती रही, तथा प्रत्येक-जन्म में उसके प्रेम का रंग गहराता चला गया। उसने प्रेम के लिए बार-बार अपना सर्वस्व त्याग किया, योग साधनाएँ की, मंत्रों के पारायण किये, उपवास रखे, गुरुद्वारों के चक्कर काटे एवं मंदिरो में माथा टेकती फिरी। उसका विरह कुन्दन की तरह दमकने-चमकने लगा था किन्तु वह उस महक को छुपाए रखने के लिए जन्म-जन्मान्तर तक प्रयत्नशील बनी रही।

पिछले किसी जन्म में श्रीनगर के समीप ही एक गाँव में लल का जन्म हुआ था । यहीं बड़ी हुई तथा इसी गाँव से उसकी शादी हुई। तब तक वह आध्यात्मिक उपलब्धियों में काफी आगे निकल चुकी थी तथा उसमें कई प्रकार की विभूतियों का प्रकाश हो चुका था। शादी के पश्चात् उसको एक पुत्र-रत्न भी प्राप्त हुआ। उसने अपने पुरोहित से कहा, पण्डितजी, भला बताइए तो सही कि यह नवजात शिशु मेरा क्या लगता है ? पुरोहित ने कहा, ''इसमें कहने की क्या बात है ? यह तुम्हारा बेटा है'' इस पर लल ने कहा, 'नहीं, इसका तथा मेरा संबंध आपको कुछ समय के पश्चात् ज्ञात होगा। अभी तो मैं इतना ही कह सकती हूँ कि मैं अतिशीघ्र यह शरीर छोड़ कर अन्यत्र जाने वाली हूँ। आज की बातचीत को याद रखना। कभी फिर आप का और मेरा, आमना-सामना होगा। इसके पश्चात् लल ने उस जन्म का शरीर छोड़ दिया ।

इसके उपरान्त उसने थोड़े-थोड़े समय के लिए छह बार जन्म लिया। उनमें से प्रायः जन्म पशु योनि के थे। सातवीं बार उसका जन्म उसी ब्राह्मण परिवार में हुआ जिस में वह पूर्व जन्म में पैदा हुई थी। जब वह शादी के योग्य बड़ी हो गई तो उसी गाँव में उसकी सगाई कर दी गई जिस गाँव में उसके पूर्व जन्म में, उसकी शादी हुई थी। लड़का बारात सजाकर उसे ब्याहने के लिए आया। वह पुरोहित, जिसके साथ पूर्व जन्म में कन्या की बात हुई थी, भी बारात के साथ था। तब उस कन्या ने पुरोहित को बुलवाया तथा कहा, 'क्या आपको याद है कि पूर्व जन्म में, मेरे मरने से पहले, आपकी तथा मेरी कुछ बात हुई थी तथा मैंने आपको, उस बात को याद रखने के लिए कहा था । क्या आपको याद है ?' पुरोहित आश्चर्य चकित होकर लल की ओर देखने लगा।

www.the-comforter.org

पुरोहित-'तुम !(थोड़ी देर ठहर कर) मुझे सारी बात याद है। अभी तक वह दृश्य आँखों के सामने घूम रहा है।'

लल-''अब मैं आपको वह बात बतलाती हूँ जिसे बतलाने के लिए आपको यहाँ आने का कष्ट दिया गया है। जो लड़का उस समय मेरा पुत्र बनकर पैदा हुआ था, आज मुझे ब्याहने के लिए, बारात सजाकर मेरे द्वार पर खड़ा है।''

पुरोहित के लिए यह एक और बड़ा आश्चर्य था। उसका मुँह खुला का खुला रहा गया। काफी देर तक मौन बना फटी आँखों से एकटक लल को निहारता रहा। फिर उसने अपने आप को संभाला।

पुरोहित- ''तो क्या तुम्हारा पूर्व जन्म का पति, इस जन्म में तुम्हारा ससुर बनने जा रहा है।''

लल-''हां ! यह सब विधि का विधान है । शारीरिक संबंध सदैव बदलते रहते हैं। एक जन्म का पति, दूसरे किसी जन्म में पिता या भाई हो सकता है। यहाँ एक जन्म का मेरा पुत्र, इस जन्म का पति बनकर आ गया है। कर्म की लीला बड़ी विचित्र है। यह सब संबंध सांसारिक हैं, अध्यात्म की दृष्टि से गौण। मेरे कुछ अन्यत्र जन्म हुए। फिर मैं यहाँ पैदा हुई। उधर वह लड़का भी बड़ा हो गया । अब हमारी शादी होने को है।

पुरोहित-'माता के साथ शादी !'

लल-'अब मैं उसकी माता कहाँ हूँ ? वह पिछले जन्म की बात है।'

पुरोहित कुछ सोचता हुआ चला गया। ''किसको पता है कि आज जो हमारे सगे-संबंधी बने बैठे हैं, पूर्व जन्मों में उनके संबंध का क्या पता ? कैसा स्वरूप रहा होगा। किन्तु लल के लिए उस के मन में श्रद्धा का भाव उमड़ पड़ा। इस लड़की को पिछले जन्म में, अगले जन्म का भविष्य ज्ञात था । इस जन्म में पिछला सब याद है। यह किसी साधारण व्यक्ति के लिए संभव नहीं। सामान्यतया तो किसी को यह भी ज्ञात नहीं कि अगले क्षण में क्या होने वाला है। लल अवश्य ही कोई संत है।

स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की अंतिम रचना पुस्तक से यह लेख क्रमशः दिया जाएगा ताकि आराधनाशील साधकों को यह ज्ञान बोध होगा कि आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए जीवात्मा जन्म-जन्मान्तर से चक्कर काट रही है। कीट, पशु, मानव सब योनियों में जन्म का चक्कर चला है लेकिन पूर्णता प्राप्त नहीं हुई।

समर्थ सद्गुरु के परम आशीर्वाद बिना यह तत्त्व ज्ञान अति दुर्लभ है। इसलिए सिद्धयोग से जुड़े साधकों से अनुरोध है कि जिनको अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से संजीवनी मंत्र मिला है वो महासौभाग्यशाली आत्मा परम धनी है। वो अपने इस अमूल्य हीरे को पहचाने और इस मंत्र का सघन जप करें। अपना अमूल्य समय व्यर्थ में नष्ट नहीं करें, ऐसी अपेक्षा है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

मनुष्य सृष्टि की सर्वोच्च कृति है लेकिन अभी इस कृति में अपूर्णता है जो अगले विकास में पूर्ण किया जा सकता है और वह होगा-अतिमानव- एक ऐसा दिव्य मानव जो रोग, शोक, और दुःख-दर्द से रहित होगा। वर्तमान मानव और अतिमानव में इतना भारी अंतर होगा कि अभी किसी से तुलना, कर ही नहीं सकते। महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार मानव मात्र का दिव्य रूपान्तरण हो जाएगा। इस कार्य के लिए उन्होंने आध्यात्मिक तपस्या करके सृजनकर्ता को, भूमण्डल पर अवतरित होने के लिए करुण पुकार की।

सत्युग के आगमन और नये जगत् के निर्माण के लिए 24 नवम्बर 1926 को भूमण्डल पर परमसत्ता का भौतिक में अवतरण हुआ। उस अवतरित शक्ति ने 1968 से अपना कार्य प्रारम्भ किया। गहन आराधना के बाद मनुष्य मात्र के रूपान्तरण के लिए संजीवनी मंत्र की दीक्षा दी और लाखों लोगों को चेतन कर दिया। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का मुख्य उद्देश्य है-संपूर्ण मानव जाति का दिव्य रूपान्तरण।

इस रूपान्तरण के कार्य के लिए श्री अरविन्द ने विस्तार से समझाया है कि यह कैसे पूर्ण होगा ? साधकों के ज्ञान-बोध के लिए यह लेख दिया जा रहा है-

मनुष्य में इस क्रम को उलटना संभव है, बल्कि कहना चाहिए अनिवार्य है, क्योंकि अब आगे विकास एक नवीन शारीरिक संघटन को मुख्य उपकरण बना कर उसके द्वारा नहीं, मनुष्य की चेतना के द्वारा, चेतना के रूपांतर द्वारा ही होना संभव है और आवश्यक भी यही है। आंतरिक वस्तुस्थिति में सदा ही चेतना का परिवर्तन मुख्य तत्त्व रहा है। विकास का सदा से आध्यात्मिक महत्त्व रहा है और भौतिक परिवर्तन उसमें केवल सहायक बनता था। किन्तु इन दोनों अंगों के आदिकालीन असामान्य संतुलन के कारण यह संबंध छिपा हुआ था, बाह्य अचेतन तत्त्व के पिंड ने महत्त्व की दृष्टि से अध्यात्म तत्त्व को, सचेतन पुरुष को, छिपा रखा था, गौण बना दिया था। किन्तु एक बार संतुलन ठीक हो जाने पर अब आवश्यक नहीं कि शरीर का परिवर्तन क्रम में चेतना के परिवर्तन से पूर्व घटित हो। शरीर में जो भी परिवर्तन आवश्यक होगा, चेतना स्वयं अपने रूपांतर द्वारा उसे अनिवार्य बनायेगी, सिद्ध करेगी।

श्री अरविन्द और श्रीमाँ अपनी खोज में ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते गये, उसी क्रम से उनके कार्य में हम तीन भिन्न काल देखते हैं, जो कि अत्यंत उज्ज्वल से अत्यंत धूमिल की ओर, अलौकिक चमत्कार से आडम्बरहीन सामान्य

www.the-comforter.org

की ओर, वैयक्तिक कोशाणु से पूरी धरती की ओर बढ़ते मालूम होते हैं। प्रथम काल में, जिसे कि कुछ शिष्य 'उज्ज्वल काल' बताते हैं, हम चेतना की शक्तियों का परीक्षण होते देखते हैं। यह सन् 1920 से 1926 तक चलता रहा। फिर श्री अरविन्द ने अपना ध्यान पूरी तरह भागवत्कार्य पर केन्द्रित करने के उद्देश्य से 24 वर्ष तक पूर्ण एकान्तवास किया। इस नवीन शक्ति, अतिमानस के - जिसे कि उन्होंने खोज लिया था - संपर्क में आकर श्री अरविन्द और श्रीमाँ ने पहले अपनी देह पर एक के बाद एक, अनेक प्रयोग करके देखा।

श्री अरविन्द की पदावली में 'परीक्षण' भी 'प्रयोग' की तरह ही महत्त्वपूर्ण शब्दों में से एक है। उन्होंने लिखा है, वर्ष पर वर्ष बीत गये कि मैं दिन-रात इतनी सावधानी से परीक्षण करता रहा हूँ जितनी कि कोई वैज्ञानिक भी अपने सिद्धांत अथवा प्रणाली को भौतिक स्तर पर परखने में न बरतता होगा।

अनुभवों-प्रयोगों के इस विशाल समूह में से, जिनका श्री अरविन्द की पत्रावली और ग्रन्थों में जगह-जगह उल्लेख मिलता है, हम प्रतीक रूप में चार घटनाएँ चुन सकते हैं जो चेतना की शक्ति दर्शाती हैं, और श्री अरविन्द के 'परीक्षणों' का उदाहरण है। किन्तु यह ध्यान रहे कि ये और ऐसी ही सैकड़ों दूसरी छोटी-छोटी चीजें हैं, और न तो कभी श्री अरविन्द ने इन्हें कुछ विशेष महत्त्व दिया, न श्रीमाँ ने। वार्तालाप और पत्रों में यदि संयोगवश इनका उल्लेख न होता तो ये सब बातें हमें कभी पता भी न चल पाती।

पांडिचेरी पहुँचते ही श्री अरविन्द ने 'देखने के लिए' पहले एक लंबा उपवास किया। कुछ वर्ष बाद जब एक शिष्य ने उन्हें पूछा कि क्या आहार के बिना रहना संभव है तो उसे यह जवाब मिला - हाँ, है। एक बार जब मैंने लगभग तेईस या कुछ और अधिक दिन तक उपवास रखा था... तो मैंने यह समस्या प्रायः हल कर ली थी। मैं सदा की भांति आठ घंटे चल लेता था। अपना दिमागी काम और साधना मैंने पहले की ही तरह जारी रखे और कोई भी समस्या नहीं हुई। किन्तु शरीर में जो भौतिक द्रव्य को देखा कि 23 दिन के बाद मेरे अंदर बल की जरा भी कमी नहीं हुई। किन्तु शरीर क्षीण होने लगा और मुझे

www.the-comforter.org

कोई सुराग नहीं मिला कि शरीर में जो भौतिक द्रव्य की कमी होती जा रही है, उसकी पूर्ति क्योंकर हो।

उपवास समाप्त करते समय भी मैंने लंबे उपवास करने वालों के सामान्य नियम - अल्पाहार से आरंभ - का पालन नहीं किया और उतनी ही मात्रा लेनी शुरू की, जितनी मैं पहले लिया करता था।... प्रयोग के रूप में मैंने एक बार जेल में उपवास किया था, वह दस दिन का था।

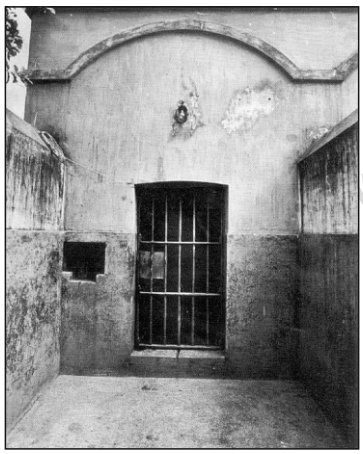

उन दिनों शयन भी मैं तीन में से एक रात किया करता था तब मेरा दस पौंड वजन घटा था, पर दस दिन बीतने पर मुझे अपने अंदर उपवास करने से पहले की अपेक्षा अधिक बल मालूम होता था... तब मैं वह वजन उठा लेता था, जो कि सामान्यतः मैं पहले नहीं उठा साकता था। दूसरी बात अलीपुर के दिनों की है - ''मैं ध्यान एकाग्र किये था और मेरे मन में यह शंका थी कि क्या 'उत्थापन' जैसी सिद्धियाँ संभव है? तब मैंने अकस्मात् अपने आपको ऊपर उठा पाया... सामान्यतः मैं चाहता तो भी अपने शरीर को उस अवस्था में न रख सकता; और मैंने देखा कि मेरे कुछ भी किये बिना शरीर उसी तरह अधर में उठा रहा।''

पांडिचेरी में एक और बार श्री अरविन्द ने बाजार से इतनी सारी अफीम मंगवाई जो कई आदमियों का काम-तमाम कर देने के लिए काफी थी, और चेतना के नियंत्रण की परीक्षा के लिए उन्होंने वह उसी समय खा ली, पर उससे उन्हें कुछ भी नहीं हुआ। चौथी चीज का हमें पता चला, एक शिष्य की अधीरता के कारण जिसे शिकायत थी कि उसे चिट्ठियों का जवाब जल्दी नहीं मिलता। उत्तर में श्री अरविन्द ने लिखा था - तुम यह नहीं समझते कि साधारण पत्र-व्यवहार पर मुझे बाहर घंटे लगाने पड़ते हैं। तीन घंटे दोपहर में और सारी रात सुबह के छह बजे तक, मैं यही काम करता हूँ... यदि तुम मुझे आजकल दोपहर से प्रातः तक लेखन में आकंठ डूबे देखो... किसी शिष्य का पत्थर सा हृदय भी पसीज जाये।

क्रमशः अगले अंक में...

आध्यात्मिक सत्संग ?

इस युग में आध्यात्मिक सत्संग का सही अर्थ प्रायः लुप्त हो चला है। भजन, कीर्तन, कथा, उपदेश आदि सत्संग के कई प्रकार, इस समय संसार में प्रचलित हैं। सत्संग का सीधा साधा अर्थ है, सत्य का साथ करना। केवल ईश्वर ही सत्य है बाकी दृश्य जगत् सारा नाशवान है। अतः जिसके संग के कारण उस परमतत्त्व परब्रह्म परमात्मा, सच्चिदानन्दघन की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार हो जाय, वही सच्चा सत्संग है। इस समय संसार से ईश्वर तत्त्व प्रायः पूर्ण रूप से लोप हो गया है।

इस समय उस तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति मात्र कल्पना का विषय रह गया है। उस परमतत्त्व के लोप होने के सम्बन्ध में समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी महाराज कहते हैं:-

''तिन्ही लोक जेथून निर्माण जाले।
तया देवरायासि कोणी न बोले।।
जगी थोरलादेव तो चोरलासें।
गुरुवीण तो सर्वथाही न दीप्ते।।''

''तीनों लोक-भूलोक, द्युलोक, पाताल लोक जहाँ से उत्पन्न हुए उस सर्वश्रेष्ठ परब्रह्म देवाधिदेव श्रीराम को कोई नहीं कहता। जग में, सर्वोत्तम देव चुराया गया है। उसके चोरी हो जाने के बाद, वह दिखाई नहीं दे रहा है। उस सर्व देवाधिदेव की चोरी की तो गई है किन्तु सद्गुरुरूपी गुप्तचर की सहायता के बिना वह नहीं दिख सकेगा।'' परन्तु इस युग में संत सद्गुरु मिलना बहुत ही कठिन है। इस सम्बन्ध में समर्थ गुरुदेव कहते हैं :-

गुरु पाहतां पाहतां लक्ष कोटी।
बहुसाल मंत्रावली शक्ति मोठी।
मनी कामना चेटके धातमाता।
जनीव्यर्थ रे तो नव्हे मुक्तिदाता।।

''गुरुओं को देखाते-देखाते तो लाखों-करोड़ो गुरु मिलेंगे। वे बहुत वर्षों तक मंत्र द्वारा चतुराई से अपने भीतर जादूगरी की बड़ी शक्ति द्वारा कामना-पूर्ति कर लोगों को अपने चंगुल में चिन्तामणि सदृश अपनी मन्त्र शक्ति के प्रभाव से ही फँसाते फिरते हैं।

www.the-comforter.org

ऐसे लोग व्यर्थ होते हैं। वे मोक्षदाता-सद्गुरु पद पाने के अधिकारी नहीं होते''। आगे ऐसे गुरुओं के लिए समर्थ गुरु कहते हैं। :-

''नव्हे चेटकी चालकू द्रव्यभोंदू।
नव्हे निंदकू मत्सरू भक्तिमंदु।
नव्हे उन्मतू वेसनी संगबाधू।
जगी ज्ञानियो तोचि साधु अगाधू।।

जो जादू करने वाला होता है, लोगों के सम्मुख दीनता दिखाकर आह्लाद उत्पन्न करनेवाला या मिथ्या प्रशंसा करनेवाला होता है तथा अपने साधुत्व का प्रदर्शन कर लोगों से पैसा लूटनेवाला द्रव्यलोभी होता है, वह सद्गुरु पद का अधिकारी नहीं होता।''

''वह किसी की निन्दा नहीं करता किसी से मत्सर्य नहीं रखता, उन्मत्त नहीं होता, व्यसनी नहीं होता तथा बुरी संगति में नहीं रहता। जो बुरी संगतियों में बाधा डालनेवाला ज्ञान सम्पन्न होता है, वही अगाधज्ञानी व्यक्ति साधु है।ऐसा जानना चाहिए।

नव्हे वाडगी चाहुटी काम पोटी।
क्रियेवीण वाचालत तेचि मोटी।।
मुखे बोलिल्यासारिखें चालताहे।
मना सद्गुरु तोचि शोधूनि पाहे।।

वह व्यक्ति चुगलखोर नहीं होता। उसके अन्तरंग में काम भावना नहीं होती।वह मुख से बोले गये शब्दों का वैसा ही आचरण करने में सभ्य होता है।हे मन इन लक्षणों से युक्त व्यक्ति को ही सद्गुरु समझना चाहिए।

जनीं भक्त ज्ञानी विवेकी विरागी।
कृपालू मनस्वी क्षमावंत योगी।
प्रभूदक्ष व्युत्पन्न चातुर्य जाणे।
त्याचेनि योगे समाधान बाणे।।

वह सद्गुरु पद का अधिकारी भक्त होता है और विवेक, वैराग्य सम्पन्न, कृपालु, मनस्वी क्षमाशील, योगी, समर्थ, अत्यन्त सावधान, प्रत्युत्पन्नमतिवाला, चातुर्यसम्पन्न तथा संगति करने पर समाधान की प्राप्ति कराकर समाधानी बनाने वाला होता है।

नव्हें तेंचि जाले नसे तेंचि आल।
कलों लागले सज्जनाचेनि बोल।।
अनिर्वाच्य ते वाच्य वाचे वदावें।
मना संत आनंत शोधीत जावें।

जो पहले नहीं था, वह हो गया - स्वरूप का बोध पहले नहीं था, वह हो गया। जो नहीं आता था, वह समाधान आ गया। ब्रह्मज्ञान से पूर्ण स्वरूपानन्द का भोग करने से समाधान चित्त में वास करने लगता है। गहन वेदान्त वाक्यों का बोध जो स्वरूप का संकेत दिया करता था, वह पहले नहीं समझता था। वह

बोध महावाक्य (तत्त्वमसि) आदि का अर्थ सद्गुरुदेव के कृपा वचनों से सहज ही आत्मसात् हो जाने से समझ में आने लगा।

जो ब्रह्म निर्गुण निराकार और वाणी से परे अनिर्वचनीय था, वही वाणी से कहने योग्य और वाच्य हो गया। यह सद्गुरुदेव की कृपा है कि वही ब्रह्म अब मेरे कथन का विषय हो गया है। हे मन ! नित्य अनन्त ब्रह्म को सत्संगति में रहकर खोजते रहो।''

www.the-comforter.org

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि ऐसे संत सद्गुरु की सत्संग को ही सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक सत्संग कहा जा सकता है।

अगर आध्यात्मिक सत्संग प्रत्यक्ष परिणाम न दे तो उसे सत्संग नहीं कहा जा सकता। केवल विश्वास से काम नहीं चल सकता। जिस प्रकार गुड़ खाते ही मुँह में मिठास पैदा हो जाता है, ठीक वैसा ही परिणाम सत्संग का होना चाहिए। इसके विपरीत सभी कर्मकाण्ड और प्रदर्शन हैं। समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी महाराज ने जो संत सद्गुरुदेव की पहचान बताई है, वैसा ही गुरु, 'सत्संग' के योग्य होता है।

संसार के प्रायः सभी धर्म संसार के सर्वभूतों (जड़ और चेतन) की उत्पत्ति शब्द से मानते हैं। सभी धर्म कहते हैं कि वह शब्द 'प्रकाशप्रद' है। सर्व प्रथम शब्द और प्रकाश से ज्ञान की उत्पत्ति होती है, फिर संपूर्ण ब्रह्माण्ड और त्रिगुणामयी की उत्पत्ति होती है। फिर त्रिगुणामयीमाया अपने जनक 'शब्द' और प्रकाश (प्रकाशप्रदशब्द) की प्रेरणा से संसार के सर्वभूतों की रचना करती है। संसार का यह सारा प्रपंच उसी प्रकाशप्रद शब्द की देन है। दूसरे शब्दों में यह सारा संसार एक ही परमसत्ता का विस्तार मात्र है। संत सद्गुरुदेव निराकार ब्रह्म का सगुण साकार स्वरूप ही होता है।

अतः संत सद्गुरुदेव द्वारा प्राप्त प्रकाशप्रद शब्द की धार के सहारे उस दिव्य प्रकाश के आनन्द और रोशनी में उस पथ पर चलना सम्भव है, जहाँ से आदि में वह प्रकाशप्रद शब्द

प्रकट होता है। उसी को अलख लोक के ऊपर वाला, अगम लोक कहकर संतों ने बारम्बार वर्णन किया है। उस लोक में जाते ही जीवात्मा अपने जनक परमात्मा में पूर्ण रूप से लीन हो जाता है। इसी का नाम 'मोक्ष' है। प्रकाशप्रद शब्द के दिव्य प्रकाश से मनुष्य को अपने अन्दर उस दिव्य आनन्द की प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है। बिना उस आनन्द की प्राप्ति के मनुष्य को मोक्ष का अर्थ ही समझ में नहीं आ सकता।

जब तक संत सद्गुरुदेव की कृपा से उस दिव्य आन्तरिक आनन्द का स्वाद मनुष्य चख नहीं लेता, उसे माया के प्रभाव से बाहरी भौतिक सुख ही प्रभावित करते रहते हैं। वह बारम्बार यही कहता है कि क्या जरूरत है मोक्ष की ? संसार के इस आनन्द को छोड़ कर मोक्ष का प्रयास मूर्खता है। क्योंकि उसने उस दिव्य आन्तरिक आनन्द का स्वाद चखा ही नहीं है। इस लिए वह सांसारिक सुखों में और दिव्य आन्तरिक आनन्द में भेद समझ ही नहीं सकता है। यह सारा प्रपंच केवल उपदेश, प्रदर्शन, शब्दजाल और दर्शन शास्त्र के ग्रन्थों आदि से समझ में नहीं आ सकता।

ये सब मनुष्य को बुद्धि की कसरत मात्र करवा कर ज्ञानी बनने का भ्रम ही पैदा कर सकते हैं। इस समय संसार में यही भ्रम खुला बिक रहा है। अध्यात्म ज्ञान के नाम से यह संसार में सर्वत्र उपलब्ध है। क्योंकि यह ज्ञान कोई प्रत्यक्ष परिणाम नहीं देता है, इसलिए संसार के युवा वर्ग का विश्वास इससे खत्म हो चुका है। मृत्यु के करीब पहुँचे हुए शक्ति हीन स्त्री-पुरुष ही जीवन में किये हुए काम को याद करके अपनी ही तस्वीर से भयभीत होकर इसे पाने का प्रयास कर रहे हैं। क्योंकि भय के कारण बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, अतः वे असन्तुलित प्राणी कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते।

अध्यात्म का पतन उस समय प्रारम्भ हुआ, जब धर्म गुरुओं ने इसका सम्बन्ध पेट से जोड़ लिया। आज सभी धर्मों के धर्मगुरुओं को जीवित रहने के लिए हठधर्मिता से अध्यात्म पर चलना पड़ रहा है। ऐसा करना उनकी मजबूरी है। इस हठधर्मी प्रवृत्ति ने संसार के लोगों को विद्रोही बना दिया। इस प्रकार अध्यात्म एक तमाशा बन चुका है। सर्व भूतों के जनक आदि कारण के प्रति ऐसा भाव परिवर्तन विशेष का द्योतक है।

यह वैज्ञानिक सच्चाई है कि जब किसी बात की अति हो जाती है तो उसका अन्त हो जाता है। ऐसा होना अनिवार्य भी है। क्योंकि

www.the-comforter.org

अनादि काल से उत्थान और पतन का यह क्रम चला आ रहा है।

संसार का अन्धकार उस दिव्य ज्ञान ज्योति के उदय हुए बिना हटना असम्भव है। पहला दीपक जलना ही कठिन होता है, उसके बाद तो दीपक से दीपक जलने की प्रक्रिया के अनुसार पूरे विश्व में प्रकाश फैलने में देर नहीं लगेगी। जब यह मधुर स्वर लहरी संसार के वायु मण्डल में तरंगित होने लगेगी तो आम प्राणी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। इस प्रकार यह दिव्य प्रकाश, प्रकाश की गति से भी तेज, पूरे संसार में फैल जावेगा। प्रतिरोधक शक्तियाँ संभल भी नहीं पाएंगी। परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि वे बिना विरोध के शान्त हो जाएंगी। उस परमसत्ता को संसार से उनका सफाया करना है। अतः उस विकृति के सफाये के लिए अन्धेरे और उजाले का संघर्ष अनिवार्य है। इसके बिना पूर्ण शान्ति असम्भव है।

यह क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है। पाप का अन्त कुरुक्षेत्र में ही होता है। महर्षि श्री अरविन्द की यह घोषणा कि वह परमसत्ता भारत की भूमि पर 24 नवम्बर 1926 को अवतरित हो चुकी है, गलत नहीं है। उसके अवतरित होने का स्पष्ट अर्थ है, अन्धकार का सफाया। ऐसा अनादि काल से होता आया है। हमें इतिहास को ध्यान में रखते हुए ऐसे संघर्षों से घबराना नहीं चाहिए। क्योंकि ऐसा होना अनिवार्य है। ऐसा अनादि काल से होता आया है।

संसार में अन्धकार से जो संहार और

हाहाकार मचा हुआ है, वह पूर्ण शान्ति का उषाकाल है। दीपक जब बुझते समय तेज प्रकाश फैलाता है, वैसे ही अन्धकार मिटने से पहले भयंकर तबाही मचाता है। यह प्रकृति का अटल नियम है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
11 दिसम्बर 1988

Distributing the Eternal Bliss....

-Gurudev Shri Ramlal Ji Siyag
(15 June 1988)

"I will tell you the truth. It is to your advantage that I am leaving you. If I don't go away then the helper will not come to you. But if I go then I will send him to you. When he will come, he will convict the world concerning sin, religiousness and judgement. Concerning sin, because the people of the world didn't believe me; concerning religiousness, because I am going to the Father, and you will never see me again. Concerning judgement, because the ruler of this world has been found guilty."

"I still have many things to tell you, but you cannot bear them now but when that Spirit of truth will come, he will guide you into the entire truth, he will not speak on his own. Whatever he will hear, he will speak, and he will tell you about the incidents that are yet to occur. He will glorify me for he will imbibe

www.the-comforter.org

what I said and will tell you. All that the Father has, is mine; therefore, I said that he will absorb what I said and declare it to you."

I could not talk about this till today because of hesitation and started working in the spiritual world. I was informed that I will not be successful here (Bikaner).

In this relation, in that small book, 'Yuhanna', I was made to understand, what Jesus himself has explained in this relation- "Jesus himself was witness to this

that a saint is not respected in his own motherland." But I started my work here (Bikaner) due to stubbornness. I didn't succeed in spite of making full efforts. I was expecting the failure and I was also informed about it beforehand but out of hesitation I couldn't express it in front of anyone.

Time is very less and a lot of responsibilities have been handed over to me. This is a universal job. It is related to the entire mankind; India alone doesn't have the sole right over it. I was wrong in my thinking; it is not wrong to fail. The kind of bliss that I and the people connected with me from spiritual point of view experience, has been explained by Yuhanna, the disciple of Jesus. He said, "This is an inner happiness which comes in the hearts of all true believers. This bliss remains constant inside the heart and doesn't come and go like the material happiness. His bliss is complete and He continues to pour it in the heart's bowl until it starts overflowing."

The above facts are really affecting me. All the other paths except for this one, have been closed in the physical world. So, I have clearly decided to appear before the world, dropping the sense of shyness and hesitation. If the Supreme Power wants it, then how can I stop it? My stubbornness will not work here. That is why I have agreed to obey all the instructions by completely surrendering myself. Now very soon I will try to establish contact with the countries of the western world.

I have been made to understand that the people of the world are eagerly waiting. It is just a matter of receiving the message. People started feeling it a long time back. Many saints of the world have already made predictions about it.

I want that along with the world, this should also spread in India because my body is made from its

www.the-comforter.org

holy soil.

This prediction made by Maharishi Aurobindo impressed me a lot- "In the course of evolution, the next step will take man to a higher and vaster consciousness and will start resolving all those problems which have puzzled and baffled him since he started thinking about personal perfection and complete society."

This can only be started by India and although its area of activity will be the whole world still its core revolution will be done by India only. Apart from this the following prediction made by Maharishi Aurobindo is also true:

"Shri Krishna descended on earth on the 24th of November 1926. Shri Krishna is not the supramental light. The descent of Shri Krishna would mean the descent of the Overmind Godhead preparing, though not itself actually, the descent of Supermind and Ananda. Shri Krishna is the Anandmaya; he supports the evolution through the Overmind leading it towards the Ananda."

The eternal bliss mentioned in the Bhagwat Geeta has been called 'Naam Khumari' and 'Naam Amal' by saints. My spiritual master brought down that eternal bliss on earth and has given me the responsibility of distributing it to the people of the world. I have now decided to distribute it freely in the world.

The poor people of India can pay attention to this only after they come out of their need for food and clothing. Years of slavery also has badly misled people. When this light will spread in the world, the world will be attracted towards India and with regular speed of evolution, will soon reach the pinnacle of progress as in such a situation all the powers of the world will contribute in the rising.

-Gurudev Shri Ramlal Ji Siyag

15 June 1988

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

धर्म क्या है?

इस समय संसार भर के सभी धर्मों के धर्माचार्य केवल प्रदर्शन, शब्द जाल, तर्क शास्त्र और अन्ध विश्वास के सहारे लोगों को आध्यात्मवाद सिखा रहे हैं। शब्द जाल और तर्क शास्त्र के सहारे धर्म की व्याख्या इस प्रकार तोड़ मरोड़ करके कर रहे हैं कि धर्म एक प्राण हीन मुर्दा लाश (शव) मात्र रह गया है। निष्प्राण धर्म कल्याण किस प्रकार कर सकता है? सभी धर्मों के धर्माचार्यों ने धर्म को एक व्यवसाय बना लिया है। धर्म के सहारे आर्थिक तथा राजनैतिक लाभ उठाया जा रहा है। ऐसा लग रहा है मानो संसार के सभी धर्माचार्यों को पक्का विश्वास हो गया है कि ईश्वर नाम की कोई शक्ति संसार में है ही नहीं। यह केवल काल्पनिक धारणा लोगों में फैलाई हुई है। इस झूठी धारणा के सहारे जितना चाहे प्राणियों का शोषण कर सकते हो। ऐसा लगता है कुए ही भांग पड़ गई है। सभी धर्म एक ही रास्ते पर चलने लगे हैं। सभी धर्माचार्य अगले जन्म में मिलने का झूठा झांसा देकर संसार को लूट रहे हैं। धन के आधार पर पाप माफी का प्रमाण पत्र तक देने लगे हैं। इससे घोर अपराध क्या होगा। अगर ऐसी विषम स्थिति में भी भगवान अवतार नहीं लेते हैं तो समझ लेना चाहिए कि प्रलय का समय बहुत सन्निकट है। आज संसार में धर्म के नाम पर लूट अन्याय और अत्याचार जितना पनप रहा है उतना पहले कभी नहीं हुआ। हमारा इतिहास बताता है कि जब-जब ही ऐसी स्थिति पैदा हुई है, भगवान ने अवतार लिया है।

धर्म की व्याख्या करते समय हमारे ऋषियों ने स्पष्ट कहा है, कि धर्म प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। प्रदर्शन, शब्दजाल, तर्क शास्त्र और अन्ध विश्वास से इसका दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। पिछली सदी में स्वामि विवेकानन्द जी संसार में एक आध्यात्मिक संत के रूप में प्रकट हुए। अमेरिका में उन्होंने धर्म की व्याख्या

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

करते हुए कहा था "विभिन्न मत मतान्तरों या सिद्धान्तों पर विश्वास करने के प्रयत्न हिन्दू धर्म में नहीं है, क्यूंकि हिन्दू धर्म तो प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार का धर्म है। केवल विश्वास का नाम हिन्दू धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म का मूल मंत्र तो 'मैं ब्रह्म हूँ' यह विश्वास होना और तद्रूप बन जाना है"।

आत्मा

इसी संदर्भ में स्वामी जी ने एक कदम और आगे बढ़ कर कह डाला कि :-

"अनुभूति : अनुभूति की यह महान शक्तिमय वाणी भारत के ही आध्यात्मिक गगन मण्डल से आविर्भूत हुई है। एक मात्र हमारा वैदिक धर्म ही है, जो ब्रह्म कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मुक्ति संभव है। तोते की तरह कुछ शब्द रट लेने से काम चल ही नहीं सकता"। स्वामी जी ने धर्म के सम्बन्ध में स्पष्ट शब्दों में यहां तक कह दिया :- "यदि धर्म में प्रत्यक्षानुभूति न हो तो वह वास्तव में धर्म कहलाने योग्य है ही नहीं"। क्या इस समय संसार के किसी भी धर्म का धर्माचार्य उपरोक्त बात दोहराने की स्थिति में है? इस समय तो ईश्वर और धर्म की अपनी २ तर्क बुद्धी के अनुसार अजीब २ व्याख्या करके धर्माचार्य संसार के लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार की बात करने तक का साहस किसी में दिखाई नहीं देता।

इस समय संसार में मनुष्य जाति में एक ऐसा विशेष वर्ग पैदा हो गया है जो ईश्वर तथा धर्म का एक मात्र ठेकेदार अपने आप को घोषित कर बैठा है। अगर आपको आध्यात्मिक जगत में प्रवेश करना है तो उसके प्रमाण पत्र के बिना काम नहीं चलेगा। अपने प्रमाण पत्र की वह भरपूर कीमत लेकर आपको जिस रास्ते पर चलने का आदेश देगा उसी पर आपको चलना होगा। जो मान्यताएं उस वर्ग विशेष ने बना रखी है वही धर्म सम्मत है, बाकी सब रास्ते नर्क में ले जाने वाले अधर्म के हैं। इस समय संसार में धर्म के नाम पर भीख से लेकर हत्या तक की छूट है। कैसा भयंकर रूप बना डाला इस युग के मानव ने धर्म का। इस युग का मानव धन के लिए धर्म की ओट में घृणित से घृणित कार्य करने से भी नहीं झिझकता। ऐसी स्थिति में संसार में शान्ति, प्रेम, दया और सद्भाव कैसे सम्भव है।

कमलाल 4/2/88

www.the-comforter.org

मैं मुक्त कर दूंगा

www.the-comforter.org

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। गीता 18:66

''समस्त धर्मों का (सभी सिद्धांतों, नियमों, हर तरह के साधनों और विधानों का चाहे वे पूर्व के अभ्यास या विश्वास द्वारा निर्मित हुए हों या बाहर से हमारे ऊपर लाद दिये गये हों, उन सबका) परित्याग कर और एकमात्र मेरी शरण में आ जा; मैं तुझे समस्त पापों और दोषों से मुक्त कर दूंगा-शोक मत कर ।'' ''मैं मुक्त कर दूंगा- तुम्हें इस तरह परेशान होने या संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं, मानों सारा उत्तरदायित्व तुम्हारा ही हो और परिणाम तुम्हारे प्रयास पर ही निर्भर करता हो, तुमसे कहीं अधिक शक्तिशाली सत्ता इस कार्य में लगी हुई है।

चाहे कोई रोग-शोक हो या संकट उत्पन्न हो या तुम्हारे अंदर कोई पाप या मलिनता उमड़ती हो-किसी बात से तुम्हें जरा भी घबराना नहीं चाहिये। केवल उन भगवान् को दृढ़तापूर्वक पकड़े रहो। ''मैं तुझे समस्त पापों और दोषों से मुक्त कर दूंगा।'' -स्वयं भगवान् तुम्हें इन सबसे मुक्त कर देंगे। परन्तु यह मुक्ति अचानक किसी चमत्कार के रूप में नहीं आती, यह पवित्रीकरण की एक प्रक्रिया के द्वारा आती है और ये सब चीजें उसी प्रक्रिया का एक अंग हैं। ये सब चीजें ठीक उस धूल के जैसी हैं जो बहुत दिनों तक गंदे पड़े हुए कमरे को अंत में साफ करते समय बादल की तरह छा जाती हैं। यद्यपि उस धूल से दम घुटता-सा मालूम होता है, फिर भी अपने प्रयास में बराबर लगे रहो-''मा शुचः''

-महर्षि श्री अरविन्द

भारत देश की उन्नति में आध्यात्मिक चेतना की सुदृढ़ता

ऐसी स्थिति में हमारे देशवासी अगर मात्र वैज्ञानिक उन्नति को प्रगति का प्रतीक समझें तो यह एक भारी भूल होगी। फिर वह परम सत्ता 21वीं सदी का इतना शोर क्यों मचवा रही है। महर्षि अरविन्द ने कहा था, आजादी लेने के बाद भारत का स्वरूप संसार के सामने कैसा हो? यह अधिक महत्त्व पूर्ण विषय है। अगर भारत अपनी सीमाओं का विस्तार करता हुआ वैज्ञानिक दृष्टि से संसार के अन्य देशों के बराबर खड़ा हो जाय तो संसार में कुछ भी फर्क पड़ने वाला नहीं है, जहाँ इतने देश है एक और जुड़ जाएगा।

इस प्रकार भौतिक उन्नति संसार में शान्ति स्थापित करने में भी सफल नहीं होगी। वैज्ञानिक दृष्टि से द्वापर युग का मानव सर्वोत्तम स्थिति में था। फिर भी महाभारत का युद्ध हुआ और संसार वैज्ञानिकों और वीरों से खाली हो गया। अगर संसार में सच्ची आध्यात्मिक चेतना नहीं आई तो महाभारत के युद्ध में संसार की जो हालत हुई, उससे भिन्न परिणाम की आशा केवल कल्पना है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

परीक्षा की भावना भी कोई उपयोगी भावना नहीं है और उसपर आवश्यकता से अधिक जोर नहीं देना चाहिये। परीक्षाएं भगवान् की ओर से नहीं की जातीं, बल्कि निम्नतर स्तरों-मनोमय, प्राणमय और भौतिक स्तरों-की शक्तियों की ओर से की जाती हैं; भगवान् बस उन्हें होने देते हैं; क्योंकि इस तरह का परीक्षण अंतरात्मा की शिक्षा का एक अंग है और इससे अंतरात्मा को स्वयं अपने को, अपनी शक्तियों को और उन सीमाओं को, जिन्हें उसे पार करना है, जानने में सहायता मिलती है। श्रीमां प्रत्येक क्षण तुम्हारी परीक्षा नहीं कर रही हैं, बल्कि, इसके विपरीत, वह प्रत्येक क्षण तुम्हारी सहायता कर रही हैं ताकि तुम इन परीक्षाओं और कठिनाइयों की आवश्यकता से ही ऊपर उठ जाओ जो कि निम्नतर चेतना से संबंध रखती हैं। अगर तुम श्रीमां की इस सहायता के विषय में सदा सचेतन रह सको तो यह तुम्हारे लिये सभी आक्रमणों से-चाहे वे विरोधी शक्तियों के हों अथवा तुम्हारी अपनी निम्न प्रकृति के हों-बचानेवाला सर्वोत्तम रक्षाकवच सिद्ध होगा।

विरोधी शक्तियों ने अपने लिये स्वयं एक कार्य निर्धारित कर रखा है-यह कार्य है व्यक्ति की, कार्य की और स्वयं पृथ्वी की अवस्था की परीक्षा करना और यह जाँच करके देखना कि ये अध्यात्म-शक्ति के अवतरण तथा सिद्धि के लिये कहाँ तक तैयार हुए हैं। ये शक्तियाँ हमारे रास्ते में पग-पग पर बड़ी प्रचंडता के साथ आक्रमण करती हुई, छिद्रान्वेषण करती हुई, उल्टी बातें सुझाती हुई, निराशा उत्पन्न करती हुई या विद्रोह के लिये उकसाती हुईं, अविश्वास पैदा करती हुईं, कठिनाइयों का ढेर लगाती हुईं विद्यमान रहती हैं। इसमें संदेह नहीं कि इस कार्य ने उन्हें जो अधिकार दे रखा है, उसका ये अत्यंत अतिरंजित अर्थ लगाती हैं और हमें जो चीज एक राई के बराबर दिखायी देती है उसे ही ये पर्वत बना देती हैं। जरा-सा भी कहीं गलत कदम उठाया अथवा कोई भूल की कि ये रास्ते पर आ उपस्थित होती हैं और रास्ता बंद करने के लिये मानों समूचे हिमालय को लाकर खड़ा कर देती हैं। परंतु पुराकाल से इन शक्तियों को जो इस प्रकार प्रतिकूलता उत्पन्न करने दी जाती है, उसका उद्देश्य केवल यह नहीं है कि इसके द्वारा हमारी जाँच या अग्निपरीक्षा की जाये बल्कि यह है कि यह हमें एक महत्तर शक्ति, पूर्णतर आत्मज्ञान, तीव्रतर पवित्रता और बलशाली अभीप्सा और किसी चीज से नष्ट न होनेवाला विश्वास प्राप्त करने तथा कठिनाई में भगवत कृपा का अधिक शक्तिशाली अवतरण कराने का प्रयास करने के लिये बाध्य करे।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव मानव पर प्रभाव डाल सकता है ?

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।